चौबे मुक्ता प्रसाद जी

धर्मगोपाल जी चतुर्वेदी

स्व0 बाबू जी (मुक्ता प्रसाद जी) से मेरा इन पंक्तियों के लेखक से बाल्यकाल से परिचय था। मेरी नानी आपके परिवार से थीं और मैं बाल्यकाल में बहुधा उनके पास जाया करता था। अपने संबंधित होने के कारण बाबू जी मुझे भाई समझते थे।

यद्यपि बाबू जी ने बहुत उच्च शिक्षा नहीं पाई थी परन्तु उस समय जो शिक्षा पाई, वह पर्याप्त ही थी। आपका अध्ययन गहन था। आपने इंजीनियरिंग लाइन पसंद की। अपनी प्रखर बुद्धि के कारण आपने इंजीनियरिंग लाइन में उन्नति करके पद व धन कमाया, वह अनुपमेय है। आपने अपने ही बल बूते पर जो उत्थान किया, वह समाज के नवयुवकों के लिए अनुकरणीय है। एक छोटे से गांव से आए हुए व्यक्ति ने जो ख्याति केवल अपने समाज में नहीं वरन् लखनऊ जैसे नगर में अर्जित की, वह समाज के लिए एक गर्व की बात है। आपसे बड़े–बड़े इंजीनियरिंग राय लिया करते थे। लखनऊ शहर के नव–निर्माण में आपसे सदैव अधिकारी वर्ग परामर्श लिया करते थे। आपने अपने सहयोग से लखनऊ में इंजीनियरिंग कालेज की नींव डाली जो आजकल एक प्रमुख संस्था है। उससे आपका नाम अमर रहेगा। आपने अपने ही पुरुषार्थ से लखनऊ जैसे प्रख्यात शहर में अपनी मातृभूमि एक छोटे से गांव कछपुरा के नाम पर कछपुरा हाउस बनाया और अपने श्रद्धेय पिताजी के नाम पर चारबाग स्टेशन के समीप ही ही लोकमनगंज नाम का एक मुहल्ला ही डलवा दिया था। यही नहीं कि आपको लखनऊ शहर से ही अधिक प्रेम हो, अपनी मातृभूमि कछपुरा में भी वहॉ के निवासियों के परामर्श व सहयोग से एक विशाल धर्मशाला आधुनिक डिजाइन की निर्माण कराई थी, जो उनकी स्मृति चिरस्मरणी रहेगी।

बाबू जी का स्वभाव अत्यन्त सरल था। वे सदा प्रसन्न मुद्रा में रहते थे। क्रोध उनको यदा–कदा ही आता था। बड़ी–बड़ी कठिन परिस्थितियों पर उन्होंने अपने गंभीर एवं अविचल स्वभाव से ही विजय प्राप्त की थी। वे दूसरों को यथासंभव सहायता देना अपना परम कर्तव्य समझते थे। अतः जो कोई उनसे किसी विषय में परामर्श लेता, उसे वह उचित परामर्श देकर उसकी हिम्मत बढ़ा दिया करते थे। आपके परोपकारी स्वभाव के कारण आपके पास सदैव लोगों का जमघट लगा रहता था, जिनके मिलने से न तो वह ऊबते ही थे और न बिना उचित राय दिये टालते थे।

बाबू जी नवीन युग की प्रगतिशीलता के पोषक होते हुए भी प्राचीन आदर्शवाद को ठुकराने का कभी प्रयास नहीं करते थे। समयोजित सुधार तो उनका परम ध्येय था, आपने सम्मिलित कुटुम्ब प्रणाली को ही अपनी संस्कृति के अनुरूप पाया था और वे इतने बड़े कुटुम्ब को एक ही सूत्रा में बिना किसी कठिनाई के बांधे रहे। समाज में इने–गिने ही परिवार होंगे जहॉ इतने बड़े कुटुम्ब की सम्मिलित भोजन की प्रणाली चलती हो।